समकालीन हिंदी ग़ज़ल – स्त्री विमर्श।

संगिता पंढरीनाथ मांडगे

हिंदी साहित्य का इतिहास काफी प्राचीन रहा हैं! कई प्रवृतियां, वादो एवं विधाओ का विकास हिंदी साहित्य में हुआ हैं! जब हम समकालीन हिंदी साहित्य की बात करते हैं तो उनमें एक नवीन विधा ग़जल से हम रुबरु होते हैं! एक समय ऐसा आता है जब नीरस कविता से ऊब चुका पाठक किसी एक ऐसी विधा को पढना चाहता है, जो उसके जीवन के अनुभवों को एक नया आयाम प्रदान करे तथा उसके जीवन के सुखद क्षणों को ही नहीं बल्की उसके जीवन के कटु सत्य एंव वेदना तथा तात्कालिक समाज की सच्चाईयों को समझे और उनके समाज के समक्ष प्रस्तुत करे!

हिंदी के ग़ज़ल ने स्त्री समाज की स्थितीयों पर भी गंभीरता से विचार किसा हैं! उन्होंने इस बात को महसूस किसा है की, सृष्टी के आरंभ से ही समाज के विकास में स्त्रियों की भुमिका पुरुषों से महत्वपुर्ण रही है और इसलिए एक समय में समाज मातृप्रधान या आगे चलकर स्त्रियों की भूमिका घर के भीतर तक सीमित कर दी गई और उनके बंधनों को उनका आभूषण बनाकर पेश किया गया! उन्हें गुलाम बनाने के लिए अनेक प्रकार की साजिशें रची गयी! कल्पना में उन्हें देवी और पूज्या बताया गया किंतु व्यवहार में उन्हें भोग्या और दासी बना दिया गया! कभी उन्हें बाजार मे बेचा गया और कभी दान की वस्तु बनाया गया ऐसा नहीं था की, नारियों में प्रतिभाशक्ती या शक्ती की कमी थी, लेकिन जब भी वे पुरुषो के सामने चुनौती बनकर खडी हुई उन्हें भयभीत करके दबा दिया गया! इस संदर्भ मे मृणाल पाण्डे की वक्तव्य दृष्टण्य है दृ जिस प्रकार हाथी के चार भिन्न अंगो को छूकर चार अंधो ने हाथी के विषय में एक संपूर्ण मानस चित्र बनाया और उसकी 'प्रामाणिकता' को लेकर वे हठपूर्वक आपस में लडते रहे, ठीक उसी प्रकार सदियों से दार्शनिक, विचारक, साहित्यकार आदि अपनी दृष्टी – विशेस से नारी को एक पक्ष को संपूर्ण नारी समझने – समझाने की भूल करते रहे हैं! यही कारण हैं की नारी एक साथ देवी या भोग्या, माया और शक्ती श्रध्दा और ताडन की अधिकारी समझी जाती रही हैं! ये सज्ञाएँ नारी की चरित्रगत विशेषताओं को उभारती अवश्य हैं, 'नारी' को परिभाषित नहीं कर सकती, भारतीय समाज में नारी एक ऐसे संदर्भ के रुप मे समझी जाती है, जो अपने चारो ओर के विभिन्न समस्याओं अनुत्तरित प्रश्नों एवं ढेर सारी यातनाओं से दुखी हैं! हिंदी ग़ज़ल में नारी जीवन की गहराई को चित्रित करते हुए अनेक पहलुओं की यथार्थता के साथ चित्रित किया हैं!

स्वाधिनता प्राप्ती के बाद सबके साथ ही स्त्रियों की स्थिती में भी, खासकर शिक्षीत स्त्रियों की स्थिती में कुछ सुधार हुआ! किंतु स्त्रियों की बहुसंख्यक आबादी फिर भी पूर्वदशा में बनी रही और बनी हुई हैं! अब भी उनके कदम दृ कदम पर वर्जनाएं है और अब भी बहुत सारी स्त्रिया घरों की चहारदिवारी में जीवन गुजार देती हैं! और बाहर के संसार में अपरिचित रहती हैं! बचपन में पिता, जवानी में पती और बुढापें में पुत्र की गुलामी में रहना उनकी नियति बनी हुई हैं! शिक्षित औरतों की उनमें भी कामकाजी औंरतो को एक प्रकार आदि अवश्य मिली, किंतु घर से बाहर निकलते ही यौनादि एवं दूसरे शोषणो का शिकार होने लगीं! पूंजीवादी ने उन्हें विज्ञापन की चीज बना दिया और अब तो बिना स्त्री देह की चमक के किसी विज्ञापन में प्रभाव ही नही पैदा होता हैं! महानगरों के उत्तर आधुनिक और भोगवादी समाज व संस्कृती में तमाम अच्छें घरों की लडकियां भी कॉलगर्ल्स के रुप में वेश्यावृत्ति की ओर बढ राही हैं! हमारी अर्थवादी व्यवस्था और पुरुषप्रधान समाज ने इसे रोजगार मानना आरंभ कर दिया हैं! और उन्हे सेक्सवर्कर के नाम से हर चीज में लाभ तलाशा जाने लगा हैं! दहेंज जैसी समस्याएं लगातार भयावह होती गई हैं! हिंदी ग़ज़लकारों ने इन सारी स्थितियों की बहुत गंभीरता और सहानुभुति के साथ चित्रित किया हैं! पुरुष प्रधान भारतीय समाज में नारी की स्थिती यह हैं ।

हिंदुस्तानी औरत यानी घर भर की /खातिर कुर्बानी गृहलक्ष्मी पद की व्याख्या हैं!
चौका दृ चुल्हा – रोटी दृ पानी / कत्ल हुआ कन्या – भ्रुणों का तहीबें दिखी बेमानी –
शिवओम अम्बर

दिल में सौ दर्द पाले बहन – बेटियां।/घर मे बाहें उजाले बहन – बेटियां!
हो रही शादियों के बहाने बहुत, /भेडियों के हवाले बहन – बेटियां! – ओम प्रकाश यति।

आजादी, प्रगति, आधुनिकता और शिक्षा के बावजूद स्त्रियों की स्थिती अब भी नारकीय बनी हुई हैं! अब भी उनके कदम दृ कदम

पर चुनौतियां हैं!/बच्चियां, लडकियां, औरतें,/कांच की खिडकीया औरतें!
कोख से ही सजा मिल रही,/की है क्या गलतियां औरतें! – वरिष्ट अनूप

गरीब परिवारों की लडकियों की विवशताओं की बहुत मार्मिक एवं आक्रोशपूर्ण ढंग से इन पंक्तियों मे व्यक्त किया गया है दृ

आठ बरस में ही पढ लेती है गुस्ताख नारी की भाषा, पर रहती खामोश गरीबी से भहराकर छोटी लडकी! जिस दिन दुर्गा, **काली, चंडी के निथकों को समझेगी यह रख देगी उस दिन सत्ता की जडें हिलाकर छोटी लडकी!**
– नचिकेत।

पूंजावादी मानसिकता और पैसे की संस्कृति के कारण दहेज की समस्या आज अपने चरम भयावह रुप में खडी हैं! इस समस्या के कारण लडकियों के मां–बाप और भाई दृ भिखारियों की स्थिती में पहुंच जा रहे हैं, वही सारी लडकियां आंखो मे मुरझाए सपने के लिए आजीवन कुंवारा राह जा रही है, जिनकी शादियां हो रही हैं उनमें से भी बहुत सारी दुल्हने आग, जहर, फांसी और अन्य बर्बताओ के हवाले हो जा रही! गालो में इन स्थितियों की बडी मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है –

चाहो गिरवी हवेलियां रख दो,/उनके कदमों में बेटियां रख दो!/साथ डोली के अर्थियां रख दो!
– सुरेंद्र चतुर्वेदी।

लडकियों और स्त्रियों की जिंदगी कितनी मुश्किलों औंर लडकियों और कांटो – भरी हैं, उन्हे हर वक्त किन–किन अग्नि दृ परिक्षाओ से गुजरना पडता हैं! इसका चित्रण कवयित्रियों ने भी अपनी गालों में प्रभावशाली ढंग से किया हैं! इसके अतिरिक्त नारी समाज की समस्याओं और आशाओं – आकांक्षाओं को भी इन कवयित्रियों ने बडे प्रामाणिक एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यक्त किया हैं दृ

ये पांव दृ जैसे मील का पत्थर गडा हुआ.!/हम फिर भी अपने आप में मीलों चला कियें!
– मधुरिमा सिंह।

और लोगों की तरह वह हस नही पाती कभी,/एक लडकी टूटती, जुडती, सिसकती रात भर! – वर्षा सिंह।

इस प्रकार समकालीन हिंदी ग़ज़लों में स्त्री – समुदाय की यशास्थिती, शोषण, दमन और वर्जनाओं के साथ ही उनकी परिवर्तनकामी आकांक्षाओं और प्रतिरोधी विचारों को भी बेहतर अभिव्यक्ती मिल रही हैं!

संदर्भ ग्रंथ –

1) मृणाल पांडे – धर्मयुग (पत्रिका) 19–25 एप्रिल, 1987
2) अमीर खुसरो और उनका साहित्य – सं।डॉ।भोलानाथ।
3) आधुनिक हिंदी काव्य में यथार्थवाद – सं।डॉ।नरेश तिवारी।
4) ग़जल विधा – सं।आर।पी।शर्मा। 'महर्षि'

हिंदी विभाग,
श्री मुलिकादेवी महाविद्यालय, निघोज